भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संगपत्रिका

वर्ष 14, अंक–11–12 गुरुवार, 26 दिसं.' 91	सम्पादक : साधु मुकुंदजीवनदास गुरु ज्ञानजीवनदासजी दिसम्बर, 1991	वार्षिक चन्दा–10.00 प्रति अंक : 1.00

आओ, हम 'योगी शताब्दी' मनायें.....

[योगी शताब्दी का मंगल वर्ष आ रहा है.....
तो, प.पू. काकाश्री द्वारा स्वयं के हीरक महोत्सव (60वीं जन्म जयंती) पर हमें पूछे नीचे के चार प्रश्नों पर
सतत् चौकन्नी निगाह रखकर भीतर से टटोलें....
और सुरुचि रखकर उसके मुताबिक वर्तने लग पड़े।
यही हमने सच्ची योगी शताब्दी मनाई मानी जाएगी।

महाराज, स्वामी, ब्र.स्व. शास्त्रीजी महाराज, ब्र. स्व. योगीजी महाराज, गुरुहरि काकाजी महाराज और प्रत्यक्ष स्वरूपों इस हेतु हमें खूब बल दें–यही प्रार्थना !]

''व्यवहारिक बुद्धि छोड़ कर–सचमुच,

- ☐ योगीजी महाराज को जो करना था उसके लिए हम तैयार (तत्पर) हैं?
- ☐ योगीजी महाराज का जो अभिप्राय था–जो भावना थी–वह हमारे दिल में अखंड रहती हैं?
- ☐ योगीजी महाराज की जो योजना थी कि पाँच पचास-दो सौ जनों को तैयार करना–उसके लिए चौबीस घंटे में से एक घंटा दिल की सच्चाई से हमारा प्रयत्न (कोशिश) है?
- ☐ अन्दर-अन्दर दूसरों को उपदेश करते हैं–परामर्श देते हैं, पर वही स्वयं पर लागू करके हम वर्त पाते हैं?

–ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी महाराज

गुरुहरि प.पू. पप्पाजी का अमृत महोत्सव

अहो हो ! कैसा अहोभाग्य !—कि हम सभी ने हमारे इस जीवनकाल के दौरान गुरुहरि प.पू. पप्पाजी के अमृत महोत्सव की मंगलघड़ी का आनन्द मनाकर परम धन्यता का अनुभव किया... साधकों की साधना को सरल बनाने, सेवायज्ञ में एक दूसरे से मिल जुलकर-एक दूसरे के सूचनों का दिल से स्वीकार करके अपने स्वभाव का दर्शन करके-दोष कबूल करके-साधना पथ पर तीव्रता से दौड़ने, चैतन्य के आध्यात्मिक विकास के लिए गुरुभक्ति अदा करने की अनुपम सूझ देने ही ऐसे महोत्सव मनाये जाते हैं..... दूसरी ओर प्रत्यक्ष स्वरुप के प्रति समर्पित गृहस्थों के लिए भी तन, मन, धन से अपने गुरु के प्रति गुरुभक्ति अदा करके, जीवन भर का पुण्य कमाने के ये अनमोल अवसर होते हैं। इससे भी अधिक जाने-अनजाने आये गये ऐसे अल्प सम्बन्ध वालों को अन्तकाल पर यदि इस महोत्सव के दृश्य की स्मृति मात्र भी हो जाये तो वचनामृत गढड़ा प्र-3 में दिए महाराज के वरदान अनुसार उसे भगवान के धाम की प्राप्ति होगी..... प.पू. पप्पाजी ने हमें यह महोत्सव मनाने का अद्‌भुत मौका दिया उसके लिये हम इनके सदैव ऋणी रहेंगे। बाकी तो अनन्त जन्मों की जड़ता को स्वयं के साधनों से पिघालने जीव बेचारा साधन करेगा भी क्या ?

गुरुहरि प.पू. पप्पाजी का अमृत महोत्सव मनाने हम सब दिल्ली से करीब 160 मुक्तों 8th Nov.'91 की रात को विद्यानगर जाने के लिए निकले। इस दौरान एक और रहस्य की बात पता चली कि प.पू. पप्पाजी के अमृत महोत्सव में इतने सारे मुक्तों का जाना—वह तो 1978 में प.पू. काकाजी द्वारा किया गया संकल्प था, जबकि 1978 में तो दिल्ली में मुश्किल से 10-15 परिवार ही सत्संग से जुड़े थे। प.पू. काकाजी के हीरक महोत्सव के समय पर संतों द्वारा की गई एक थोड़ी-सी सेवा से प.पू. काकाजी अत्यन्त राजी हो गये तब संतों ने आशीर्वाद माँगे थे कि हे काकाजी ! हमें जैसी आपकी सेवा की उमंग है....वैसी ही सर्व स्वरूपों के प्रति हो.....उस उमंग में कभी भी तनिक भी भावफेर न हो.....तब प.पू. काकाजी एकदम अत्यन्त राजी होकर बोले थे कि **''तुम्हें मेरा सम्बन्ध है न?''**

और फिर स्वयं ही बोले—

काकाजी यानी?

'अभेददृष्टि और अविरोधवृत्ति !'

तो ऐसी भेददृष्टि में मैं तुम्हें झूलने ही नहीं दूँगा।

सो इस बारे में तो चिन्ता करना ही नहीं।

प.पू. पप्पाजी की 75वीं जयन्ती पर ऐसी ही उमंग से दिल्ली से हम सवा सौ मुक्तों को लेकर जायेंगे और.....

अब यह बात सुनकर सभी को आश्चर्य हुआ कि अहो हो ! प.पू. काकाजी कैसे पारदर्शक पुरुष थे, इससे भी अधिक आनन्द यह हुआ कि प.पू. काकाजी हमें कैसे सर्वदेशीय मिले जिन्होंने स्थूल रूप से विद्यमान न होते हुए भी अपने संकल्प से प्रभु के मूर्तस्वरूप प.पू. पपापाजी के अमृत महोत्सव का हमें दर्शन कराया।

हमारी ट्रेन 6 घंटे late होने की वजह से हम सब 9th Nov. शाम को 6.30 बजे बड़ौदा पहुँचे..... और रात को करीब नौ बजे हमारे उतारे पर पहुँचे... अभी सब हाथ-मुँह धो ही रहे थे कि प.पू. पप्पाजी की गाड़ी का हार्न सुनाई पड़ा.....सब दर्शन के लिए दौड़ पड़े.....दर्शनमात्र से ही सभी की थकावट व भूख न जाने कहाँ गायब हो गई.....किसी

को स्वप्न में भी कल्पना नहीं थी कि महोत्सव की सभा से रात को 10.00 बजे प.पू. पप्पाजी दर्शन का सुख देने वहाँ पधारेंगे.....प.पू. पप्पाजी एकदम सेवकभाव से बोले : **'दिल्ली वालों को मिलने सभा खत्म होते ही सीधा आ गया'** प.पू. पप्पाजी का सेवकभाव देखकर.....अरे रे ! आज ये–स्वरूपों कैसे गरजु बने हैं ! सभी का मन स्वरूपों के प्रति श्रद्धा से भर उठा.....

अगले दिन सुबह 10 Nov. ब्रह्मज्योति अर्थात् महोत्सव मनाने के स्थान पर पहुँचे। गोलाकार में ''75'' लिखकर उसमें अमृत कलश का symbol देकर भव्य द्वार बनाया हुआ था। पूरी ब्रह्मज्योति रंग-बिरंगी पताकाओं व प.पू. पप्पाजी की मूर्तियों व ब्रह्मसूत्रों से सुशोभित थी। सर्वप्रथम सभी मुक्तों अपने प्राण प्यारे प्रभु प.पू. काकाजी की समाधि स्थान पर दर्शन करने गये। पवित्र स्थल, पवित्र काल, पवित्र क्रिया व पवित्र संग का समन्वय होने के कारण सभी के दिल से प्रार्थना के उद्‌गार निकल पड़े कि हे काकाजी ! आपने जो आत्मीयता-सुहृद्‌भाव का नितरता धोध बहाकर..... हमें निरपेक्ष प्यार दिया व हमारे पापों की प्रायश्चित रूप प्रार्थना भी आप ही करते रहे...वह ऋण हम कभी न भूलें व आपकी योजना में अपना कुछ भी प्यारा न रखकर साथ दे पायें।

सभा आरम्भ होने के समय स्टेज का पर्दा खुलते ही हंसाकार के विशाल व भव्य सिंहासन पर विराजमान प.पू. पप्पाजी का दर्शन हुआ.....सब आश्चर्यचकित मूक होकर देखते रहे.....आसपास स्वरूपों के आसन लगाये थे.....स्टेज की भव्यता को देखकर हरेक के मुख से संतों व सेवकों के भक्ति भरे अजोड़ परिश्रम के लिए हृदय से अपने आप धन्यवाद-धन्यवाद निकल रहा था। सर्वप्रथम ब्रह्मज्योति के अधिष्ठाता व युवकों के प्राणसमान प.पू. साहेब ने सभी स्वरूपों का आभार व्यक्त करके स्वागत किया। तत्पश्चात् पू. साहेब ने कहा कि भक्तों का माहात्म्य समझना–वही सच्चा अमृतपर्व है, गुणातीत स्वरूपों की प्रसन्नता उसी में है। देश-विदेश के हरिभक्तों के प्रासंगिक उद्‌बोधन के बाद गुणातीत स्वरूपों ने आशीष वर्षा की.....आखिर में प.पू. पप्पाजी ने दिल्ली केन्द्र से प्रकाशित हिन्दी अनुवादित वचनामृत cassette का उद्‌घाटन करके अत्यन्त प्रसन्नता बताई व साधना का सरल रास्ता बताया कि पू. काकाजी के शब्दों में 'भुलका'-बिल्ली का बच्चा बन जाओ। महाराज को हमारा अहम-गर्व बिलकुल पसन्द नहीं व प.भ. मल्कानी साहब की सर्वदेशीयता के गुण पर प.पू. पप्पाजी ने अत्यधिक प्रसन्नता व्यक्त की.....

अत्यन्त आनन्द के साथ सभा समाप्त हुई। सबने महाप्रसाद लेकर स्वयं को धन्य माना। 11th Nov. को वड़ताल, नड़ियाद, मेहलाव, सांकरदा आदि तीर्थस्थानों का दर्शन करके रात को सोखड़ा–हरिप्रसादस्वामिजी ने सत्संग की सभा में प.पू. पप्पाजी के लिए बने सांकेतिक व आध्यात्मिक प्रेरणा देने वाले हंस के सिंहासन का रहस्य बताया कि जैसे हंस हमेशा मोती का ही चारा चरता है, वैसे गुरुहरि योगीजी महाराज के संबंध में आने के बाद–उनका अभिप्राय जानने के बाद प.पू. पप्पाजी ने संबंध वालों का गुण ही देखा.....बस यह याद रखना।

दोपहर का प्रसाद लेकर हम सब आनन्द करते-करते महोत्सव की स्मृति का पाथेय भरकर, अनोखे सत्कर्म का पुण्य कमाकर दिल्ली वापस आने निकले और....दूसरे दिन सुबह साढ़े चार बजे प.भ. मल्कानी साहब को नई दिल्ली स्टेशन पर संतों को लेने आये देखकर उनकी गुरुभक्ति के प्रति सबके हृदय अपने आप नतमस्तक हो गये!!!

❑ ❑ ❑

वचनामृतम्.....

आज का युग–वैज्ञानिक युग है.....मनुष्य ने वैज्ञानिक क्षेत्र में अत्यधिक प्रगति की है.....चन्द्रमा तक भी जा पहुँचा है....किन्तु आध्यात्मिक उन्नति ? यह एक गम्भीर प्रश्नचिन्ह ही है.....युग परिवर्तन के साथ-साथ अब समय की माँग भी बदली है....पहले की तरह आज कोई खाली नहीं.....स्वार्थ मात्र पर सब रिश्ते टिके हैं.....स्वयं के परिवार के लिए मानवता के नाते भी जब व्यक्ति के पास समय नहीं तो आध्यात्मिकता, आत्मिक विकास के लिए जीव के प्रयास का तो प्रश्न ही कहाँ रहा ?

नये युग के समय की माँग को देखते हुए एक नये कार्य का आरम्भ हो रहा है.....लगभग 210 वर्ष पूर्व धरती पर मानव स्वरूप में अवतरित भगवान स्वामिनारायण द्वारा जीवों के कल्याण के लिए बहाया अमृतधोध–साधना का सरल मार्ग स्पष्ट करते अमृत वचनों का संकल्प हमारे पास 'वचनामृत' नामक ग्रन्थ के रूप में गुजराती भाषा में उपलब्ध है। 'वचनामृत' हमारा जीवन पथप्रदर्शक ग्रन्थ है.....अत्यन्त मूल्यवान सन्देश, सभी शास्त्रों का निचोड़, अज्ञान, अविद्या, माया से परे जाने के सरल रहस्य उसमें छिपे हुए है। मूलतः गुजराती भाषा में होने के कारण जनसामान्य का अधिकांश वर्ग इस अमूल्य लाभ से अब तक वंचित रहा था.....दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा में रहते हुए हिन्दी भाषी मुमुक्षुओं भी सरल भाषा में दिये गये इस जीवंत व सचोट ज्ञान से लाभान्वित हो सकें इसी मंगलकारी भावना से भगवान स्वामिनारायण की इस अमृतवाणी का हिन्दी अनुवाद करके audio cassette द्वारा आपके पास पहुँचाने की 'सेवा' करके भक्ति अदा करने का अब अल्प प्रयास शुरु हुआ है।

अंग्रेजी में एक लोकोक्ति प्रसिद्ध है कि God's voice is heard in many ways, we should give ears to listen.....अर्थात् प्रभु की आवाज कई रूपों में, कई रास्तों से आती है लेकिन उसे सुनना चाहिए। ठीक उसी प्रकार समय की माँग को देखते हुए 'वचनामृत' ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद करके cassette के रूप में प्रकाशित करने का सर्वप्रथम सुझाव प.भ. मल्कानी साहब में से आया। आश्चर्य की बात यह हुई कि कदम-कदम पर संयोग भी ऐसे बनते गये कि सभी को यह प्रतीति हुई कि इस ऐतिहासिक कार्य को कराने की प्रभु की ही पूर्व निश्चित योजना हो। इस क्षेत्र की हमें तो कोई जानकारी भी न थी, परन्तु पहले प.पू. काकाजी ने खूब करीब से संपर्क में आये प.भ. राजन ठाकुरजी की अचानक उन्हीं दिनों दोबारा भेंट हो गई और उन्होंने सारी व्यवस्था की जिम्मेदारी स्वयं पर ले ली। पूर्ण पुरुषोत्तम श्रीजी महाराज ने ही प.भ. मल्कानी साहब के द्वारा प्रेरणा देकर हमें इस अमूल्य सेवा का लाभ प्रदान किया। इसलिए महाराज का यह ऋण हम भी कैसे भूला पायेंगे? प.भ. मल्कानी साहब को भी इस सुझाव के लिए निमित्त बनने पर दिल से हार्दिक धन्यवाद।

दूसरी ओर हम सभी ने दूरदर्शन द्वारा प्रसारित 'महाभारत' धारावाहिक में नैपथ्य से आती 'समय' की आवाज को खूब अच्छी तरह सुना है.....आनन्द की बात यह है कि वही 'समय' को बोलने वाले प.भ. हरीश भिमाणी ही 'वचनामृत' में

महाराज की परावाणी को आवाज देने की अद्‌भुत सेवा कर रहे हैं। साक्षात् नारायण की वाणी बोलने की सेवा से और अधिक इस जीवन का साफल्य क्या? भगवान स्वामिनारायण ही उन्हें इस सेवा के फलस्वरूप न्याल-न्याल कर देंगे.....हम सभी भी उनके अत्यन्त आभारी हैं....

नई पीढ़ी को आध्यात्मिक ग्रन्थों का पठन करके जीवन में उतारने की बात तो स्वप्न लगती है। सो दिनचर्या दौरान-नाश्ता करते हुए, कार में कहीं आते जाते हुए व गृहणियाँ रसोई बनाते समय, घर के अन्य कार्यों को करते-करते भी कैसेट द्वारा लाभ ले सकती हैं.....इस अमृत वाणी का प्रत्येक शब्द कल्याणकारी है जो जीव की चेतना को गति देगा.....जीवधारा बदल देगा.....मानव जीवन के सही मूल्यों का अर्थ समझायेगा और.....भगवत्स्वरूप संत की सेरे छाया में कोटि साधनों से न बदलने वाले जड़ स्वभाव भी परिवर्तित करेगा !!!

भगवान स्वामिनारायण ने वचनामृत कारियाणी 12 में स्वयं कहा है कि **जीवात्मा चाहे कैसा भी कामी, क्रोधी, लोभी, लम्फट होगा किन्तु यदि वह भगवान पुरुषोत्तम नारायण की कथावार्ता प्रेम से सुनेगा तो उसके सब विकार नष्ट हो जायेंगे और वह निर्विषयी हो जायेगा।** ऐसे युगपुरुषों के आशीर्वाद तो शाश्वत् होते हैं....

सूचना :– 'वचनामृत' हिन्दी audio कैसेट द्वारा प्रकाशित होने के कारण 'भगवत्कृपा' पत्रिका में आता 'और श्रीजी महाराज ने कहा' स्तम्भ अब से बन्द कर रहे हैं– सहज आपकी जानकारी हेतु।

✸ ✸ ✸ ✸

ब्रह्मप्रवाह

पारायण सर्वोपरि ही होगी। प.पू. बापा करेंगे। तो शुरुआत करने से पहले उसके लिए एक घंटा अनुष्ठान–पाँच जने मिलकर कर लेना। बुद्धि गुरुचरण में और–दीनता से बोला करेंगे तो गुरुचरण में से गुरु-हृदय में–शिष्य के हृदय में प्रवेश करके वेदरस के मुताबिक–प्रेरणा करते ही हैं। यूँ दो जने मिलकर ब्रह्मशक्ति को ही कार्य करने दो। आजमा कर देखो और अनुभवों की पक्की प्रतीति–अनुभूति करो यही पारायण का फल है।

जय जय जयकार होगी ही।

भजन स्मृति-ध्यान और प्रार्थना रामबाण इलाज–सभी के लिए है। सो–स्वरूपलक्षी–प.पू. बापा को ही धारकर शुरू करना।

–प.पू. काकाजी महाराज
1974

✸ ✸ ✸ ✸

जन्म कर्म च मे दिव्यं—

गुरुहरि योगीजी महाराज को युवकों के प्रति विशेष अनुराग (स्नेह) था। वे बार-बार बोलते भी थे—**'युवकों मेरा हृदय है'। भविष्य के नये दौर को देखते हुए** स्वामिश्री युवकों को तैयार कर रहे थे, ताकि युवकों नये समाज के साथ कदम से कदम मिला कर चल सकें.....भविष्य में युवकों में लाचारी या हीन भावना ना रहे इसलिए उन्होंने युवकों को परस्पर हिन्दी English में प्रश्नोत्तर करने की आज्ञा कर रखी थी।

एक बार दो युवकों ने दो दिन से आपस में प्रश्नोत्तर गोष्ठी नहीं की थी। तो गुरुहरि योगीजी महाराज सभा के बीच से उठ कर आये व अन्तर्यामी रूप से युवकों को बिठाकर बात करी देखो दो दिन से तुम लोग आपस में प्रश्नोत्तर नहीं करते। **एक बार आज्ञा दी, तो उसका जरा भी लोप नहीं होना चाहिए**.....सभी काम छोड़ कर पहले वह कर ही लेना ! एक राजा ने आज्ञा करी कि सब नौकर कुएं में छलांग मारें, पर भीगे बिना (सूखे) बाहर निकलें। कुएं में छलांग मारकर कौन भीगे बिना निकल सकता है? पर तब भी एक नौकर ने राजा के वचन से आज्ञा पालने छलांग मारी और राजा का इनाम व विश्वास पा लिया। हमें भी इस तरह आज्ञा की ओर ध्यान रखना चाहिए। **प्रगट की एक आज्ञा करोड़ नियमों से अधिक है।**

फिर दुबारा बोले कि 'आगे जाकर खूब बल आयेगा, भले अभी पता नहीं चलता। तुम्हें आपस में बातें करनी चाहिए। तुम्हें नये जमाने के मुताबिक बातें करनी आनी चाहिये। हमारी तो गांव की बातें.....मैं ग्यारह वर्ष का आया.....पन्द्रह सद्गुरुओं की सेवा करी है। विज्ञानदासस्वामी की कसनी में कोई भी ना रह सके, तब भी सतरह साल रहा और प्रसन्नता ली। निर्गुण स्वामी को भी राजी किया.....'

हम सेवा की ओर अगर जाग्रत नहीं रहेंगे तो मोक्ष खो बैठेंगे....उदासी नहीं रखना। देह के दुःख के सामने नहीं देखना। देह का रोज तिरस्कार करना। **मन के साथ लड़ाई लेना—मन निकम्मा है ! हे !** हे मन, (यदि तू मुझे) **भगवान नहीं भजने देगा तो, तेरा चूराचूरा कर दूँगा**—ऐसी मन के साथ लड़ाई लेना। पर उदासी नहीं रखना। **श्रीजी महाराज साक्षात् मिले हैं** तो उदास नहीं रहना और श्रद्धा से लगे रहना। दोष का क्या भार है? ऐसे टल जायेंगे.....'

गुरुहरि योगीजी महाराज कैसे पारदर्शक पुरुष होंगे जो अपनी दिव्य दृष्टि से आने वाले नवयुग की दृढ़ नींव पहले ही तैयार कर रहे थे। और कई बार हम अपने दोषों की गटर को देखते हुए ऐसे स्वरूप, ऐसी भव्य प्राप्ति को भी खोने को तैयार हो जाते हैं, तो उन्होंने आशीर्वाद भी साथ में दे दिये कि मेरी आज्ञा पालोगे तो इन दोषों के टलने का तो पता भी नहीं चलेगा !

✸ ✸ ✸ ✸

स्वामी की बातें

191. .....देह को छोड़कर जिन्हें पाने थे, जिन्हें मिलना था, वे भगवान हमें मिल गये ! देह छोड़कर भगवान को पाने थे, साधु को पाना था, वे भगवान और साधु ये जो हमें मिले हैं वे ही हैं, यूँ गद्दी पर हाथ मारकर कहा व यह जो साधु है वह भगवान का धाम है। उसे देह रहते हुए ही पा लिया है व किसी के कसूर में न आयें सो 'शिक्षापत्री' पालनी। इसीलिए महाराज ने लिखी है।

प्र-4,59

192. प्रगट भगवान हैं, प्रगट साधु है, प्रगट मोक्ष है—सो धर्म में रहकर आयु पूरी कर लेनी। बहुत ही बड़ा लाभ हुआ है, उसे संभालना, वर्ना जैसे चिन्तामणि को कोई आँख में धूल डालकर छीन ले जाये वैसे कोई ले जायेगा। भगवान का यह करिश्मा है—वर्ना भगवान के सिवा किसी से इतने जीव के अन्तर शुद्ध न हो पाये और भगवान हो वह अन्तर पकड़ सकता है और यह बहुत ही बड़ा लाभ हुआ है। वह क्या कि—महाराज का प्रगट होना और उसी दौरान हमारा जन्म हुआ है। तब जाकर ये बातें मिली हैं। वह तो बहुत ही लाभ हुआ है—यूँ कई बार कहा।

प्र-4,60

193. अक्षरधाम बहुत ही दूर है परन्तु हमारे लिए भगवान ने नजदीक में किया है। यह मनुष्य जैसे होकर बैठे हैं और आपको अक्षरधाम के मुक्तों जैसी बातें समझ में आती हैं व करते हैं वह भगवान व इस साधु का अनुग्रह है। और ऐसा समागम मिला है तब भी अहो ! अहो ! नहीं होता—वह तो ऐसी बात कभी करी नहीं, पर इस लोक का ही कूट-कूट करा है।

प्र-4,62

194. .....घर में रहना—वह तो मेहमान की भाँति रहना।

प्र-4,63

195. ....कोई पूछेगा कि अक्षरधाम कैसा होगा? तो भगवान देखे हैं, अक्षरधाम में रहने वाले देखे हैं, भगवान के हजूर में व भगवान के पास रहने वाले देखे हैं तथा कान में बातें करी हैं। अब तो तेज नहीं दिखाई पड़ता—इतना बाकी है। इसलिए यह जो साधु हैं उसमें ही भगवान रहे हैं—सो विश्वास रखना।

प्र-4,67

196. .....बहुत बड़ा लाभ हुआ है इसलिए बाजरा इकट्ठा करके साधु के पास बैठे रहना।

प्र-4,68

197. महाराज कहते हैं कि हरिभक्त के अवगुण मैं नहीं देखता। अवगुण यदि दिखाई दे जाये तो ऐसे मुँह फेर लेता हूँ जैसे लोक में माँ-बहन को निर्वस्त्र—खुले देखकर कोई मुँह फेर लेता है।

प्र-4,49

198. हमारी कसर कितनी है? तो जैसे मिले हैं वैसी उनकी महिमा जानते नहीं व जो लाभ हुआ है वह भी समझते नहीं—जैसे

गायकवाड़ राजा का लड़का मूली के लिए रोये—इतनी खोट है। प्र-4,70

199. .....यह साधु पहचाने गये वह बड़ी बात है। यह साधु पहचाने जायें ऐसे नहीं है। यह तो परदेशी साधु है। वह पहचाने गये, यह तो आश्चर्य जैसा है। प्र-4,71

200. संकल्प करे उसे महाराज कुछ नहीं देंगे। वहाँ दृष्टान्त है कि—एक बार महाराज दही-भात खा रहे थे। तब सभी को प्रसादी पाने का संकल्प हुआ और मैंने नहीं करा। तो, बुलाकर मुझे प्रसाद दिया। प्र-4,73

❑ ❑ ❑

व्रतोत्सवसूची

1.	दि.	31.12.91	मंगलवार	एकादशी, व्रत
2.	दि.	14.1.92	मंगलवार	धनुर्मास समाप्ति, नौमी—श्री स्वामिनारायण जयन्ती
3.	दि.	15.1.92	बुधवार	मकर संक्रान्ति
4.	दि.	16.1.92	गुरुवार	एकादशी, व्रत
5.	दि.	19.1.92	रविवार	पौषी पूर्णिमा—मू.अ.मू. गुणातीतानन्दस्वामिजी का भागवती दीक्षादिन
6.	दि.	26.1.92	रविवार	भारत प्रजासत्ताक दिन, समग्र गुणातीत समाज को ब्र.स्व. काकाजी महाराज का अंतिम सम्बोधन

PUBLISHED BY SADHU MUKUNDJIVANDAS FOR YOGI DIVINE SOCIETY,
A 103, Ashok vihar-III, Swaminarayan Marg, Kakaji Lane,
Delhi-110 052. (India) Tel. : 7229327, 7128838
Printed at R.P., Printers, Shahadra, Delhi-110032